BY;

Dr. Suchitra Devi

Associate Prof.

N.A.S College

Education Department

M.Ed. 2 semester

Paper CC8: Educational Technology and ICT

UNIT: 2

1. Modalities of Teaching, Training, Instruction, Conditioning and Indoctrination

In education, learning modalities (also known as learning styles) are defined as the ways in which students use their senses throughout the learning process to acquire new skills. There are four main modalities that educators often consider: kinesthetic (moving), visual (seeing), auditory (hearing), and tactile (touching). Most students can learn through any of the following, but that doesn't mean they don't have preferences (as we all do) to make instruction more meaningful and engaging. When you think about a specific lesson, chances are, as an educator, you use a combination of these approaches every day.

Let's take introducing two-dimensional shapes to kindergarten students as an example. You might begin by explaining that there are different kinds of shapes and then define the qualities of 2D shapes aloud before transitioning into drawing pictures of these shapes on your whiteboard. To help students apply what they've learned they may break into groups and make "human shapes" on the carpet or perhaps collect shapes around the room to share with a partner and record in a math notebook. Just like that you've touched all four learning modalities without breaking a sweat.

But, before we get too deep into implementation of these four learning modalities, we must first ask the question—**do learning modalities even matter?** Let's take a closer look at what some of the research and commentary on this topic says to determine how much value can be gained by weaving these styles into your instruction.

- Recommendations from Teaching as Leadership acknowledge that you shouldn't build in a kinesthetic activity for the sake of adding motion to instruction, but rather rotate through the modalities as they

make sense in the context of what you're covering for a more varied, exciting approach.

- Read Write Think also notes the power of reaching students in different ways using varied instructional approaches. By asking students to talk about their learning, create visual representations, utilize new media, and write in many modes, they are given more ways to build new skills and actively apply learning to deepen understanding.
- There are many educational researchers that believe utilizing preferred learning styles to support specific students is not based on sound scientific research. While some site that each learner activates instruction by converting it into a preferred representation, therefore enriching processing and recall ability through this process others simply say learning modalities are more focused on the content, not the individual student and their ability to consume information. If you'd like to read more excerpts from additional research findings, we suggest you take a look at this Edutopia article: Are Learning Styles Real and Useful?

So, maybe leveraging learning styles in the classroom is more of a best practice than a science? We can work with that. Either way, evaluating modalities can open up a wealth of ideas you can incorporate into your lesson planning right away. Take a look at this infographic from our Personalized Learning Plans How-To Guide to learn more about the four primary learning styles.

Visual learners:

- Want the teacher to provide demonstrations
- Often use lists to keep up and organize thoughts
- Have well-developed imaginations

Tip: *Use videos, illustrations, written instructions, and graphic organizers*

Auditory learners:

- Want verbal instructions
- Enjoy dialogues, discussions, and pl to explore concepts
- Listen and repeat to recall informati

Tip: *Use verbal instructions, music, discussion, and audiobooks*

Tactile learners:

- Prefer to take notes while reading or during lectures
- Often like to draw or doodle to remember
- Do well with hands-on activities

Tip: *Use manipulatives and encourage notetaking, drawing, and painting*

Kinesthetic learners:

- Think and learn best while moving
- Prefer to do rather than watch or lis
- Do best when they can manipulate actual objects during learning

Tip: *Use games, role-playing, hands activities, and experiments*

:Following are some book captures to make it understand better;

...अधिगम के लिये समुचित वातावरण उत्पन्न करता हो ... रखते हो।

और शिक्षण की क्रियाओं का सम्बन्ध अधिगम स्वरूपों में होता है।

शिक्षण अधिगम, प्रशिक्षण तथा अनुदेशन में अन्तर

(Difference among Teaching, Learning, Training and Instruction)

शिक्षण, अनुदेशन तथा अधिगम (Learning) का साधारणतः एक ही अर्थ में भ्रान्तिवश प्रयुक्त करते हैं परन्तु इनमें पर्याप्त अन्तर है। अतः शिक्षण के सही अर्थ को समझने के लिये इन तीन के अर्थ को समझना भी आवश्यक है।

"शिक्षण पारस्परिक अन्तःप्रक्रिया का वह प्रयास है जो शिक्षार्थी को कुछ उद्देश्यों की ओर प्रभावित करता है। शिक्षण का प्रमुख तथ्य पारस्परिक अन्तःप्रक्रिया है।"

"Teaching is an attempt to influence learners towards some goals through personal interaction."

जब छात्र तथा शिक्षक का पारस्परिक सम्बन्ध तथा प्रक्रिया होती है तभी शिक्षण प्रक्रिया सम्पादित हो सकती हैं। इसके अभाव में भी शिक्षार्थी उद्देश्यों की ओर अग्रसर हो सकता है परन्तु उसे शिक्षण नहीं कहा जा सकता। वह केवल अनुदेशन मात्र ही होता है।

"अनुदेशन वह प्रक्रिया है जो शिक्षार्थी को कुछ उद्देश्यों की ओर प्रभावित करती है।"

"Instruction is the process of influencing learners towards some goals."

इसमें छात्र शिक्षक की पारस्परिक अन्तःप्रक्रिया नहीं होती हैं। अतः अनुदेशन को शिक्षण नहीं कह सकते परन्तु शिक्षण में अनुदेशन भी निहित होता है। सभी प्रकार के शिक्षण में अनुदेशन की काफी सहायता ली जाती है।

अनुदेशन से ज्ञानात्मक पक्षों का विकास ही किया जा सकता है परन्तु शिक्षण से ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक तीनों पक्षों का विकास किया जाता है। अतः कोई भी अनुदेशन शिक्षण का स्थान नहीं ले सकता। अधिगम इनके प्रभाव का परिणाम होता है।

गेट्स के अनुसार अधिगम की परिभाषा—"अनुभवों तथा अनुक्रियाओं द्वारा व्यवहार में होने वाले सुधार एवं परिवर्तन को अधिगम कहते हैं परन्तु अभिप्रेरण, भावुकता तथा परिपक्वता से नहीं।"

"Learning is the modification of behaviour through activities and experiences but not through motivation, emotion and maturity."

–Gates

शिक्षण तथा अनुदेशन का कार्य अधिगम को प्रभावित करना है। शिक्षण और अनुदेशन का लक्ष्य छात्र को किन्हीं उद्देश्यों के लिये प्रभावित करना है। उन उद्देश्यों की प्राप्ति व्यवहार-परिवर्तन के रूप में की जा सकती है। शिक्षण और अनुदेशन के अन्तर्गत क्रियाओं की व्यवस्था की जाती है जिससे छात्र को सीखने के अनुभव प्रदान किये जाते हैं और उनसे व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जाता है। शिक्षण और अनुदेशन में अधिगम निहित होता है, जहाँ शिक्षण अथवा अनुदेशन है वहाँ अधिगम अवश्य होगा परन्तु सभी प्रकार के अधिगम के लिये शिक्षण और अनुदेशन आवश्यक नहीं होते हैं। बिना शिक्षण और अनुदेशन के भी अधिगम होता है।

(1) शिक्षण एवं अधिगम (Teaching and Learning)—शिक्षण को प्रायः अधिगम का अभिन्न अंग माना जाता है। कुछ शिक्षा-शास्त्रियों का यह विश्वास है कि निश्चित रूप से ही शिक्षण

SHOT ON REDMI 7
AI DUAL CAMERA

का अन्त अधिगम में होता है। महान् शिक्षाशास्त्री किलपैट्रिक ने कहा है कि "जब तक बच्चा सीखता नहीं शिक्षक ने पढ़ाया नहीं।" यहाँ तक ही नहीं उन्होंने आगे कहा है कि शिक्षण और अधिगम में वही सम्बन्ध है जो कि बेचने और खरीदने में। इस प्रकार की युक्तियाँ और विचार आधुनिक शिक्षा जगत में एवं सर्वसाधारण में अत्यधिक प्रचलित हैं। ऊपर से देखने पर इस युक्ति में सत्यता की झलक मिलती है, किन्तु तर्क की कसौटी पर यह कथन अथवा सादृश्य (analogy) खरा नहीं उतरता।

बेचने-खरीदने और शिक्षण तथा सीखने के बीच सादृश्य का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होगा कि खरीदने और बेचने में चार तत्व हैं—(i) एक बेचने वाला, (ii) एक खरीदने वाला, (iii) बेचने की क्रिया, और (iv) खरीदने की क्रिया।

ठीक इसी प्रकार शिक्षण और अधिगम से सम्बन्धित चार तत्व हैं-

(i) एक शिक्षक, (ii) एक शिष्य, (iii) शिक्षण की क्रिया, और (iv) अधिगम की क्रिया।

शिक्षण के अन्तर्गत यह चार घटक क्रियाशील रहते हैं।

शिक्षण, शिक्षक तथा शिक्षार्थी के बीच चलने वाली परस्पर क्रिया है जिसके द्वारा छात्र किसी उद्देश्य की ओर उन्मुख होता है। शिक्षक द्वारा निर्मित अधिगम की परिस्थितियों की सहायता से सीखता है। शिक्षण का कार्य ऐसी परिस्थितियों तथा विद्यालय और कक्षा में ऐसे वातावरण का निर्माण करना है जिसके द्वारा अधिकगम को और अधिक प्रभावशाली बनाने में सहायता प्रदान की जाती है। दूसरे शब्दों में अधिगम छात्रों से सम्बन्धित मानसिक प्रक्रिया है और शिक्षण अधिगम में सहायता पहुँचाने वाला बाह्य प्रक्रम है।

(2) शिक्षण और प्रशिक्षण (Teaching and Training)—शिक्षण का कार्य अनेक संदर्भों में होता है। एक शिक्षक कई बार इसलिये पढ़ाता है कि उसके द्वारा छात्रों के व्यवहार को एक सुनिश्चित रूप दिया जाय या उनकी आदतों में सुधार या परिवर्तन लाया जाय। कई बार एक शिक्षक इसलिये भी पढ़ाता है कि वह छात्रों की धारणाओं, मान्यताओं और विश्वासों को एक निश्चित रूप दे सके या उन्हें कुछ ज्ञान प्रदान कर सके। **ग्रीन** महोदय (Thomas Green, 1977) के अनुसार इन दो सन्दर्भों में भी इन दो बातों के कारण हैं:-

(अ) किसी को यह पढ़ाना कि किसी कार्य को करने का यह ढंग है, और

(ग) किसी को यह पढ़ाना कि तथ्य या वस्तु ऐसी है।

पहली अभिव्यक्ति में शिक्षण का केन्द्र-बिन्दु व्यवहार के निर्माण पर है और दूसरे वाक्य में शिक्षण का केन्द्र-बिन्दु ज्ञान का प्रसारण है। पहले सन्दर्भ में शिक्षक किसी को कोई कार्य करना या क्रिया करना बतलाता है। दूसरे सन्दर्भ में शिक्षक किसी को ज्ञान प्रदान करता है। इस बात को हम चित्रात्मक रीति से इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं-

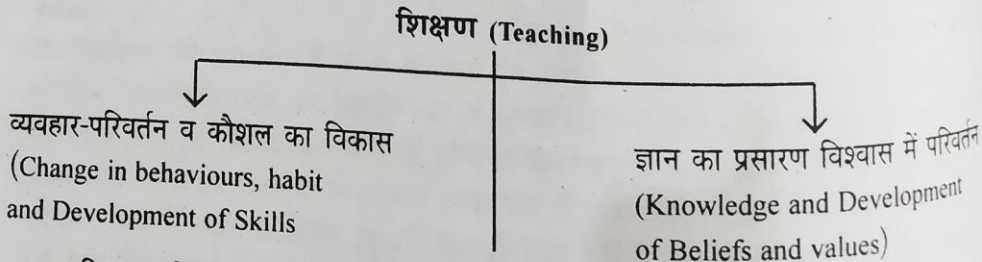

शिक्षण और प्रशिक्षण इस बात पर निर्भर करता है कि जिस व्यवहार का हम शिक्षण या प्रशिक्षण देना चाहते हैं उसमें बुद्धि की अभिव्यक्ति कितनी मात्रा में होती है। बुद्धि मनुष्य का गुण है, न कि उसकी मांसपेशियों या शरीर के अंगों का, जैसे—आँख, कान आदि। हम कभी यह नहीं कहते हैं कि एक मनुष्य के पास बुद्धिमान अंगुलियाँ हैं

एक व्यक्ति को पढ़ाते हैं किन्तु मांसपेशिक्षयों को प्रशिक्षित करते हैं। ग्रीन महोदय ने शिक्षण और प्रशिक्षण के अन्तर को स्पष्ट करते हुये इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है—"वांछित व्यवहार के प्रशिक्षण में बुद्धि के प्रकटीकरण की मात्रा का अनुपात जितना अधिक होगा उतनी ही आसानी से शिक्षण और प्रशिक्षण को एक-दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त किया जा सकेगा। वांछित व्यवहार में जिस अनुपात में बुद्धि का प्रकटीकरण नहीं होता है। उस अनुपात में हम प्रशिक्षण-पद का प्रयोग कर सकते हैं, किन्तु शिक्षण का ही नहीं।"

इस सिद्धान्त में **थॉमस एफ० ग्रीन** महोदय ने व्यक्ति में जिसको शिक्षण या प्रशिक्षण दिया जा रहा है उसकी बुद्धि के बारे में कुछ नहीं कहा है; किन्तु जो बात सिखाई जा रही है उसमें बुद्धि की क्रियाशीलता कितनी है, इसका उल्लेख किया है। अतः शिक्षण का सीधा सम्बन्ध सैद्धान्तिक पक्षों एवं ज्ञान के प्रतिपादन तथा विश्वास के परिवर्तन के साथ है और प्रशिक्षण का सीधा सम्बन्ध व्यवहार-परिवर्तन के साथ है। फिर भी उन व्यवहार-परिवर्तनों में जिनमें बुद्धि के प्रकटीकरण का अनुपात अधिक होता है वहाँ भी शिक्षण का प्रयोग सामान्यतया खटकता नहीं है। व्यवहार-परिवर्तन के उन सन्दर्भों में जहाँ बुद्धि के प्रकटीकरण का अनुपात कम होता है अर्थात् जहाँ कुछ करने या कौशलों के सीखने का सम्बन्ध रहता है वहाँ प्रशिक्षण शब्द का प्रयोग ही किया जा सकता है, शिक्षण का नहीं।

(3) प्रशिक्षण और अनुबन्धन (Training and conditioning)—उपर्युक्त विवेचन में हमने यह स्पष्ट किया कि शिक्षण का सम्बन्ध उन व्यवहारों से है जिनमें बुद्धि का प्रदर्शन अधिक मात्रा में होता है। प्रशिक्षण में बुद्धि के प्रदर्शन की मात्रा घटती जाती है। यदि बुद्धि के प्रदर्शन की मात्रा धीरे-धीरे और घटती जाय तो हम अनुबन्धन के संप्रत्यय के निकट पहुँचते जाते हैं और प्रशिक्षण के संप्रत्यय से भी दूर होते जाते हैं। हम किसी कुत्ते को शिक्षित या प्रशिक्षित करते हैं क्योंकि उसके व्यवहार में हमें बुद्धि की अभिव्यक्ति दिखाई पड़ती है। एक प्रशिक्षित कुत्ते को जब हम कोई गेंद लाने के लिये, उछलने के लिये, या दौड़कर कुछ पकड़ने के लिये शिक्षित करते हैं तब वह इन कार्यों को करता है और इनमें हमें बुद्धि की झलक मिलती है। हम उस कुत्ते को एक आज्ञाकारी कुत्ता कहते हैं; किन्तु जब हम किसी कुत्ते को घंटी की आवाज पर लार टपकाना सिखाते हैं इसे शिक्षण या प्रशिक्षण नहीं कहा जा सकता क्योंकि लार टपकाने की प्रक्रिया एक प्राकृतिक सहज क्रिया (Natural Reflex Action) है जिसमें बुद्धि की अभिव्यक्ति नहीं होती। अतः हम कुत्ते को गेंद रोकने या लाने का शिक्षण या प्रशिक्षण देते हैं किन्तु घंटी की आवाज पर लार टपकाने को अनुबन्धन करते हैं।

प्रशिक्षण की प्रक्रिया में जैसे-जैसे बुद्धि के प्रयोग या प्रकटीकरण की मात्रा घटती जाती है वैसे ही वैसे प्रशिक्षण की प्रक्रिया अनुबन्धन का उदाहरण बनती जाती है। ग्रीन महोदय ने शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुबन्धन आदि के संप्रत्ययों के भेद एवं सम्बन्धों को द्वारा स्पष्ट किया है।

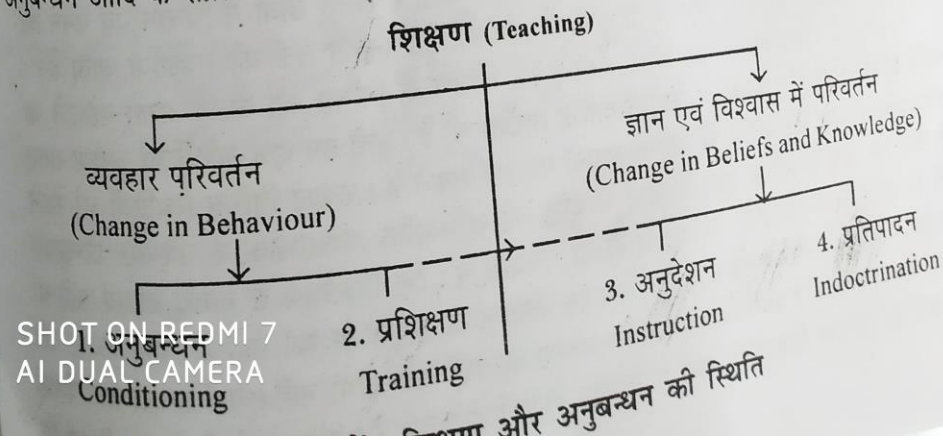

शिक्षण और अनुबन्धन की स्थिति

SHOT ON REDMI 7
AI DUAL CAMERA

(4) शिक्षण और अनुदेशन (Teaching and Instruction)—इन दो पदों में भी आपस में बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है, क्योंकि सामान्यतया इन दोनों का प्रयोग एक-दूसरे के स्थान पर होता ही रहता है किन्तु ये दोनों पर्यायवाची या एक ही अर्थ के द्योतक नहीं हैं। हम शिक्षण के ऐसे अनेक उदाहरण दे सकते हैं जिनमें अनुदेशन प्रदान करना अन्तर्निहित नहीं होता । ऐसे उदाहरणों में शिक्षण की वे बातें आती हैं जिनमें हमारा उद्देश्य मुख्यतया व्यवहार परिवर्तन की ओर होता है और हमारा ध्यान विश्वास-परिवर्तन की ओर कम रहता है। अपने पुराने उदाहरण में ही हम यह कह सकते हैं कि हम कुत्ते को बैठने, दौड़ने, कोई चीज उठाकर लाने आदि का शिक्षण या प्रशिक्षण दे रहे हैं, किन्तु हमारा यह कहना गलता होगा कि कुत्ते को शिक्षित या प्रशिक्षित किया जा रहा है, न कि उसे अनुदेशन दिया जा रहा है।

'अनुदेशन देने' से हमारा तात्पर्य शिक्षण की उस क्रिया से है जिसमें प्रशिक्षण नहीं आता। अनुदेशन की प्रक्रिया में कम से कम किसी न किसी प्रकार से एक प्रकार का वार्तालाप चलता है जिसका उद्देश्य तर्क देना, प्रमाणों की सत्यता बताना, उपयुक्तता सिद्ध करना, व्याख्या करना, निष्कर्ष निकालना आदि है। यह कहना सत्य है कि जब कभी भी हम अनुदेशन की प्रक्रिया में लगे होते हैं तब हम शिक्षण की प्रक्रिया में भी लगे रहते हैं, किन्तु यह कहना सत्य नहीं होगा कि जब कभी भी हम शिक्षण कर रहे होते हैं तब हम अनुदेशन भी देते हैं।

अनुदेशन से ज्ञानात्मक पक्ष का ही विकास हो पाता है परन्तु शिक्षण से वर्णनात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक तीन पक्षों का विकास किया जा सकता है क्योंकि शिक्षण में शिक्षक छात्र के सम्मुख उपस्थित रहता है और उसके भावात्मक एवं क्रियात्मक क्रियाकलापों का छात्र पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि अनुदेशन अपनी विकास की चरम सीमा पर पहुँचकर भी किसी शिक्षक का स्थान नहीं ले सकता।

(5) शिक्षण एवं प्रतिपादन (Teaching and Indoctrination)—जब हम किसी को शिक्षण या अनुदेशन देते हैं तब हमारा मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के व्यवहारों में या विश्वासों में इस प्रकार का परिवर्तन लाना होता है कि वह उस व्यवहार परिवर्तनों को तर्क की कसौटी पर कस सके और उसकी उपयुक्तता एवं औचित्य को परख सके अर्थात् वह यह समझ जाय कि वह जो कुछ कर रहा है या समझ रहा है, उसके पीछे कोई अच्छा तर्क या कारण है। अब हम एक ऐसी परिस्थिति की कल्पना करें जब अनुदेशन या शिक्षण केवल छात्र के विश्वासों को परिवर्तित करने के लिये होता है, किन्तु इस परिस्थिति में उसे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि इस व्यवहार-परिवर्तन के पीछे क्या तर्क है अथवा यह व्यवहार परिवर्तन समुचित है या नहीं। ऐसी स्थिति में शिक्षण या अनुदेशन लुप्त हो जाता है और इसे हम आमतौर पर प्रतिपादन (Indoctrination) कह सकते हैं। इस प्रकार के प्रतिपादन में विश्वास एवं व्यवहार को परिवर्तित करने की चेष्टा की जाती है किन्तु छात्रों में चिन्तन एवं मनन का विकास नहीं किया जाता है और न ही इस परिवर्तन के पीछे निहित तर्क को समझाया जाता है।

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण के विभिन्न रूप अलग-अलग पहचाने जा सकते हैं किन्तु उनमें एक प्रकार का पारिवारिक सादृश्य भी है। उन्हें हम एक अविच्छिन्न अथवा सतत् (Continum) वृत्त की परिधि में विभिन्न स्थानों पर रख सकते हैं। उनको विभिन्न स्थितियों पर रखने के पीछे यह बात है कि वे कितनी मात्रा में बुद्धि की अभिव्यक्ति अथवा तर्क के उपयोग का सहारा लेते हैं—बुद्धि की अभिव्यक्ति व्यवहार में हो या विश्वास में। इस विश्लेषण से हमारा तात्पर्य यही था कि हम यह तर्क दें कि अनुबन्धन या प्रतिपादन, शिक्षण के तरीके या रूप नहीं हैं। यहाँ केवल यही स्पष्ट करना था कि ये कभी शिक्षण का रूप ग्रहरण करते हैं और कभी नहीं। यहाँ हमारा तात्पर्य यह

SHOT ON REDMI 7
AI DUAL CAMERA

हम यह समझ जाएँ कि क्यों ये संप्रत्यय एक-दूसरे से घुले-मिले हैं और क्यों इनको कभी-कभी समानार्थी या पर्यायवाची समझ लिया जाता है। इस विश्लेषण का फल इतना ही है कि हम शिक्षण का एक संप्रत्यात्मक मानचित्र उपस्थित करते और उसमें यह दिखाते हैं कि शिक्षण से सम्बन्धित संप्रत्य आपस में किस प्रकार एक-दूसरे से अलग और मिले हुए हैं।

शिक्षण एक संतत क्षेत्र अनुबन्ध से लेकर प्रतिपादन तक विस्तृत है। अनुबन्ध, प्रशिक्षण, अनुदेशन तथा प्रतिपादन शिक्षण के ही रूप हैं परन्तु प्रत्येक की प्रकृति पृथक होती है जिसका विवरण तालिका में दिया गया है-

शिक्षण का सतत् प्रारूप

(Teaching as a Continum)

बिन्दु (Point)	1. अनुबन्ध (Conditioning)	2. प्रशिक्षण (Training)	3. अनुदेशन (Instructing)	4. प्रतिपादन (Indoctrinating)
उद्देश्य	व्यवहार परिवर्तन आदतों का विकास	व्यवहार परिवर्तन कौशल का विकास	ज्ञान का प्रसारण ज्ञान का विकास	विश्वास परिवर्तन मूल्यों एवं विश्वासों का विकास
शिक्षण	किसी को करने का शिक्षण करना	किसी को कुछ करने का शिक्षण	किसी को कुछ अवगत करने का शिक्षण करना	किसी को कुछ सिखाने का शिक्षण करना
पक्ष	क्रियात्मक पक्ष निम्न स्तर	क्रियात्मक पक्ष उच्च स्तन	ज्ञानात्मक पक्ष	भावात्मक पक्ष
बुद्धि	बुद्धि एक यांत्रिक रूप में कार्य करती है	बुद्धि का प्रश्न एक निम्न स्तर पर होता है	बुद्धि का प्रदर्शन उच्च स्तर पर होता है	बुद्धि का प्रदर्शन उच्चतर स्तर पर होता है
अधिगम के स्वरूप	संकेत-अधिगम स्वरूप	क्रमाकत-अधिगम स्वरूप	बहु-विभेदीकरण तथा प्रत्यय अधिगम स्वरूप	नियम विचारपूर्ण चिन्तन स्तर
शिक्षण स्तर	विचारहीन स्मरण स्तर यांत्रिक रूप में	विचारहीन यांत्रिक रूप में स्मरण स्तर	विचारपूर्ण बोधगम्य स्तर	अधिक विचारपूर्ण चिन्तर स्तर
वर्ग	←प्रशिक्षण हेतु→		←शिक्षण देने हेतु→	
प्रयोग	छोटे बालकों तथा पशुओं में प्रयोग होता है।	बालकों तथा पशुओं को प्रशिक्षण देकर कौशल का विकास	विद्यालय महाविद्यालय के छात्रों तथा पत्राचार पाठ्य में क्रम में भी प्रयोग होता है।	धार्मिक, उच्च शिक्षा जिसे मूल्यों तथा विश्वासों का विकास उच्च शिक्षा संस्थाओं।
उदाहरण	छात्रों का अक्षर ज्ञान के लिये क कबूतर ख खरगोश आदि।	पढ़ना, लिखना, कौशल का विकास तथा टंकन के कौशल का विकास करना आदि	प्रत्ययों, सिद्धान्तों, नियमों का बोध करना आदि।	अभिवृत्ति, मूल्यों भावनाओं एवं विश्वासों का विकास करना

स्मरण करना तथा शिक्षण

(Memorizing and Teaching)

थॉमस ग्रीन के अनुसार शिक्षण अनुबन्ध (Conditioning) से प्रतिपादन (Indoctrination) तक एक सतत (Continum) है। अनुबन्ध, प्रशिक्षण, अनुदेशन तथा प्रतिपादन शिक्षण के ही रूप हैं। इसी प्रकार एक ही पाठ्यवस्तु को विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर पढ़ाया जाता है क्योंकि पाठ्यवस्तु को

SHOT ON REDMI 7
AI DUAL CAMERA